10

३१

शंखिनी

1549

शंखिनी

प्रफुल्ल राय

अनुवाद : हरिप्रसाद

डा० डिल्ली रमण रेग्मी
कल्याणी रेग्मी स्मारक
पुस्तकालय

न्यू बंगाल प्रेस (प्रा०) लि०
68, कॉलेज स्ट्रीट
कलकत्ता-700073

SHANKHNI

by

PRAFULLA ROY

८९१.४३९
श२११शं

डा. डिल्ली रमण रेग्मी
कल्याणी रेग्मी स्मारक
पुस्तकालय
११९३

प्रकाशक :
प्रबीर कुमार मजूमदार
न्यू बंगाल प्रेस (प्रा०) लि०
68, कॉलेज स्ट्रीट, कलकत्ता-700073

मूल्य :
70.00

कविता-क्रम

1. मैंने उसे देखा है ... 9
2. स्नेहिल द्युतिमय परिमल—भीनी सौम्य माधुरी सम्मोहिनी ... 11
3. वो यामिनी गंधा जगने लगी ... 14
4. अरुण अधर चितवन ... 15
5. मैं मुक्त छन्द, उन्मुक्त पवन ... 17
6. रजनी अलसाई नभ साज सजा रही ... 21
7. कब आन बसे किन घड़ियों में ... 22
8. शाम होने को आई ... 24
9. कहां हुआ है अन्तर्धान ... 26
10. जो भूल से भी तुम आ जाते ... 28
11. छवि नित-नूतन रख पाती हो, कैसे? ... 30
12. उल्लास पुलक घिर-घिर छाये ... 34
13. छलक रहा, प्रिय का ही प्यार ... 36
14. निशा-परी क्यों तूने अपना ... 38
15. काकली, पिक ब्य नी तू गाती ही भली ... 40
16. प्रिये, एक बार फिर ... 42
17. सत्य ... 44
18. अभिनन्दन किन स्वप्निल भावों के ... 46
19. तरणी हो रही, स्वयं ही मैं तो ... 48
20. हृत-मणियों की पहचान आज हम भूल गए ... 49
21. कहने को भूली कहानी ... 52
22. निन्दिया आई ... 54
23. मत झूम पार्यालया राग बनी ... 56
24. पल-पल भिगोती छा रही ... 58
25. शत्-शत् प्रकाश भर आऊं ... 60
26. ओ चंदा तेरी चांदनी ... 61
27. अरुण बने कई स्वप्न कोमल ... 63
28. विहँस पड़ती नव गंध कली-सी ... 65
29. लिखनी थी एक पाती ... 66
30. एक प्रश्न ... 68
31. सुआनन अवलोकन करते ... 71
32. नभ के सुरमई वितान ... 73
33. भर आए क्यों नयना मेरे ... 75
34. संग विभावरी के मैं भी रही ... 76
35. क्यों प्यार को मैंने चिरन्तन सत्य समझा था ... 78
36. मैं अपनी ही स्नेह बाती ... 80
37. अब अपने न लगते हैं ... 82
38. सुन्दर सुप्रात बेला ... 83
39. पहचान एक बना लूंगी ... 85
40. बने सजल मसि करुणा के ... 87
41. सुधि पाई पल भर को ही ... 88
42. क्यों हो तुम निरुपाय कम्पित ... 90
43. पल निमिष सजी थी वो कैसी ... 92
44. आई वही रजनी है ... 94
45. मैंने दीप जलाए पथ पर अविरल ... 96
46. अम्बर ने डारे फाग विपुल ... 98
47. है सम्पूर्ण-पूर्ण जीवन का राग ... 99
48. स्मृति यवनिका मे बिखरे ... 101
49. भावों के स्वप्निल महल ... 102
50. किसने जगाई आज है ... 104
51. इन्हीं पलकों तले ... 106
52. कर उठे हैं आज क्रन्दन ... 108
53. मैं जलती-जलती बुझने आई ... 110
54. स्मृति प्रिय की मधुर भीनी ... 112

आत्म-निवेदन

पारिजात कविता-संग्रह प्रकृति के प्रति मेरे अगाध प्रेम की सौरभ-सुधा से सिक्त है. इसमें मेरे अन्तर्मन की अन्य संवेदनाओं की भी अभिव्यक्ति है.

बाल्यकाल से ही मैं अपनी मातृभाषा हिन्दी के प्रति एक मधुर सम्मोहन सा पाती हूँ. अपनी शिक्षा के दौरान सदा ही हिन्दी को प्राथमिकता दी है मैंने. इसके समृद्ध साहित्य के रस-सौरभ से, इसकी मृदु भावात्मक अनुभूतियों व अभिव्यक्तियों से अपने को दूर न रख सकी.

प्रकृति के नाना रूपों में मेरा अन्तर्मन मुक्त रूप से निर्बाध. विचरण करता रहा है. यह अस्वाभाविक प्रीति-रीति उस काल में मेरे मानस पर छा चुकी थी. जब मेरे अन्य साथी बाल्यकाल की चपल क्रीड़ाओं में मग्न थे या लाड़-दुलार के हिंडोलों में झूल रहे थे.

अपनी अति ही संवेदनशील प्रकृति के कारण इस संसार की छोटी-छोटी बातों से मैं गहरा आघात सा पाती थी. अश्रुपूरित नयनों से मैं कहीं भी एक भी ऐसा सहृदय भावपूर्ण मित्र नहीं पाती जिसे मैं अपने दिल की बात कह सकूं– दो घड़ी बैठ जिसके अंचल तले अपने आपको संभाल सकूं, राहत पा सकूं. मां प्रकृति के उदार ममतामयी अंचल से भला और विस्तृत, स्नेहिल अंचल मुझे कहां मिलता– आप से आप मैं इस ओर खिंचती चली आई, जैसे कोई अदृश्य शक्ति मुझे बुला रही हो. प्रकृति के साथ मैंने अपने हास्य-रुदन बांटे, स्वप्निल जगत के नाना मनहर रूप रचे, बनाये. कल्पना में ही उन बातों की अनुभूति की. जो यहां संभवतः अप्राप्य ही थी,– ऐसे सुन्दर मनमोहक ख्वाब बुने देखे जो मेरे लिए अपरिमित आनन्द व उल्लास के स्रोत थे. हल्की सी बदली की श्यामल मनहरता में घुल-घुल आये रंग-सिन्दुरी. मेरे मनोमानस को एक कमनीय माधुर्य, लालित्य से भर जाते. प्रकृति की गोद में मुझे इतने मीठे संस्मरण मिले हैं– वर्णन नहीं कर पाऊंगी.

अभी तो मैं अपनी कविताओं के विषय में दो शब्द कहने जा रही हूँ. प्रकृति-प्रेम मेरे अन्तर्मन को शुचि सुन्दर रंगों से रंगती जा रही थी. पता नहीं क्यों, ऐसा होना भी चाहिए या नहीं, कह नहीं सकती. मेरी कल्पना में सभी कुछ सुन्दर हैं, प्रेम रूप हैं, माधुर्य रूप हैं. बीभत्सता, कुरूपता की यहाँ कोई जगह नहीं.

मेरे भावों में सत्य ने, सौंदर्य ने, कई बार मचल-मचल कुछ कहना चाहा. परन्तु अब तक वह कविता के रूप में सृजित नहीं हो पाया था. मैंने अपनी प्रथम रचना 2 मार्च, 1987 को लिखी– ऐसे ही हृदय ने कुछ कहना चाहा, मैंने लिख दिया. इस संदर्भ में मैं अपने जीवन की एक महत्वपूर्ण घटना का जिक्र करने जा रही हूं. सन् 1983 में मैं अपने देश से दूर विदेश यात्रा पर गई थी. मुझे करीब पाँच साल की

अवधि तक रहना पड़ा वहाँ. तड़प-तड़प कर रह गई, मैं उन दिनों, बेचैन, विकलित, विक्षुब्ध. कहने को तो सारी सुख सुविधाएं-भौतिक जगत की वर्तमान थीं, परन्तु मैं अपने देश से दूर बहुत ही दुःखी थी. अपने देश की माटी की गंध मुझे खींचती थी, तड़पाती थी. भूले-भटके ही सही, जब कभी वहाँ दूर-दर्शन पर भारत के किसी सांस्कृतिक कार्यक्रम का प्रदर्शन होता था, मुझे लगता था. मैं यहाँ पहुँच गई हूँ. अपने लोगों के बीच अपनी पहचान के साथ हो गई हूँ. हिन्दी का एक शब्द सुनने को, पढ़ने को मैं तड़प उठती थी. अपनी भाषा से यह अलगाव, जुदाई व तड़प ही एक दिन भावनाओं के संग शब्दों की सलिला बन फूट चली. मैंने अपनी पहली पंक्ति लिखी—

मधुर मधुमास के मदमाते सौरभ में
रसवन्ती वर्षा के भीगी फुहारों में
वसन्ती बहारों के दिलकश नजारों में
अलसाई पतझड़ में मैंने उसे देखा है
... मैंने उसे देखा है.

उस क्षण मुझे ऐसी प्रतीति हुई— मेरे अन्तर्मन से कुछ संवेदनाएं फूट-फूट बाहर आना चाहती हैं, और मैं लिखती चली गई उन्हीं पद्यों का कुछ संकलन यहाँ प्रस्तुत है. कुछ में प्रकृति के मेरे गहरे प्रेम की छवि अंकित है. तो कहीं अन्तर्व्यथा अपने ही विश्वासों से पीड़ा अपनी कहती, कहीं प्रीति की अनुभूति-अभिव्यक्त हैं और अपने जीवन-साथी के अनुराग-पुष्प की सुरभि भी, अन्य भी कुछ रचनाएँ हैं—विरह के भावों को कहती हुई, —वे कल्पना में ही रची गई— उस अवस्था की मात्र कल्पना ही हैं.

कहते हैं, जो अनुभूत कर लिया जाता है— उसकी अभिव्यक्ति कहीं ज्यादा सरल व स्वाभाविक होती है, परन्तु मेरी समझ में कल्पना की अभिव्यक्ति का माधुर्य भी कुछ कम नहीं—

''जो भूले से भी तुम आ जाते
ये नयन दीप तो जल जाते.''

एक अन्य कविता—

वितान रचती विभावरी
रागों के दीप जलाती
स्मृति की कलिकाओं में
सौरभ परिमल भर जाती.

भौतिक जगत की आपाधापी में प्राकृतिक सुषमा की छवि देख पाने की लालसा जैसे खो चुकी है—

वह रजतहास स्वप्निल उल्लाष
कलियों के अभिलाप विहँस
इन्दीवर अन्चल पर बिख़रे
शबनम मुक्ता है कौन संजोता?
हृदय में पीड़ा है अथाह, कसक है,
नाना विविधाविध कारण कार्यों से जनित—

व्यथा की सलिला मिली जो
श्वास के ही तार सी
निश्वास ही हर पल बनी
आहत मेरी पहचान सी.

* * * *

अबला की निर्झरिनी अब तो
सूख गई बहती-बहती.

* * * *

अमूल्य भाव, प्रीति-सुधा व मानवीय संवदेनाओं को भुला मानव आज भौतिकता की मरीचिका में भटक रहा है. मेरे अन्तर्मन की पीड़ा ये शब्द बन निकले—

स्नेह प्रीत सौहार्द रत्नों की
पहचान आज हम भूल गये

* * * *

खो दी है मानवता महानिधि
अब भी जो यह समझ पाते
अन्चल में समाये हम अपने
उल्लास हास रंग भर लाते.

बातें तो कभी खत्म नहीं होंगी, न कहने से न लिखने से. मेरी भावनाओं के कुछ शब्द पुष्प यहाँ प्रस्तुत हैं. आशा है आपको प्रभावित अवश्य करेंगे.

— मीनाक्षी सिन्हा
709, टैगोर रोड हॉस्टल,
मिन्टो रोड,
नई दिल्ली- 110002

1

मैंने उसे देखा है

मधुर मधुमास के मदमाते सौरभ में
रसवन्ती वर्षा के भीगीं फुहारों में
बसंती बहारों के दिलकश नजारों में
अलसाई पतझड़ में मैंने उसे देखा है

शबनम की बूंदों में
नीलाम कौस्तुभ में
लता-घन- गुल्मों में
रतनारे कमलों में
मैंने उसे देखा है.

श्यामल निशा के श्वेत सितारों में
धूसरित गोधूलि में इन्द्रधनुषी रंगों में
पावस ऊषा के अपने ही कम्पन में
मैंने उसे देखा है

तपती धरा के पलाश अंगारों में
तूफानी रातों के खौफनाक मंजर में
थरथराती नैया की डूबती पुकारों में
मैंने उसे देखा है.

चंचल बयारों में
रजतमयी पंखों पर
शिशिर हिमपात में
झर- झरते सिंगार में
मैंने उसे देखा है.

बलखाती नदियों की
दुग्ध धवल धारा में
कभी मयूर-पंखी रंगों में
नित -नूतन गीतों में-
मैंने उसे देखा है.

और,
दिल की गहराईयों में
अपने ही आप में
मैंने उसे ढूंढा है-
मैंने उसे पाया है.

2

स्नेहिल द्युतिमय परिमल–भीनी
सौम्य माधुरी सम्मोहिनी

मधुमास सजाये अंचल में
पिकबयनी रागिनी पंचम
सौरभ के झरोखों से छवि
पाई मैंने थी प्रथम.

सुकुमार स्वप्न पलकों पर लिये
अधर पंखड़ियों पर गीतक,
झिलमिल द्युतिमय मुक्ता दल
ज्यों अनगिन मंजुलमय हीरक.

मलय समीरों ने कोमल
पल्लव- मंजीरें धुन थी ःसुनाई
खुल-खुल पड़ते लहरों से
तभी बोल मृदु कलियों की आई.

विस्मित मोहित झिलमिल चंचल
तारों ने कई चित्र रचे
अलसित से नयनों में अपने
माधुर्य सुमन सुषमा के खिले.

पीत अरुण मृदु ललित वरन्
श्रृंगार चारु अभिराम सजी
नील नभ से उतर मंद
तुम प्राची में स्वर्णिम छाई.

विस्तृत नभ पर अभिराम कभी
तारिक शशि-द्युति सुषमा थी छाई
घन रञ्जित अम्बर पर कैसी
चाप इन्द्रधनुषी खींच आई.

तुहिन अनगिन स्निग्ध मुक्ता दल
लिये सुरभि साजों में सजा
परिमल सुहास कलित अधरों से
विहँस खुल कहते तेरी मुदा.

महोर्मि नीलाभ तरंगित
पलक पाँवड़े वीचि-वीचि बीच
रजत किरणों से निरुपम
अभिषेक मदिर मोहिनी गुन्जन.

मृदुल मनोहर नीलम श्यामल
घन वारिद भर निज अंचल
अनगिन तृषित लोचन निमित
तुम अविरल स्नेहिल जलधार हुई.

उठ अति ऊपर वसुधा तल से
प्रशान्त चित्त, आवेशहीन
महाकार उत्तुंग शैल
गहन-तत्व चिन्तन में लीन.

शुभाति शुभ ज्योत्सना विमल
कर नूतन मोहक श्रृंगार,
निशा परी आती सपनों की
लोरी देने को संसार.

घ़र रंग छवि, नाना विधान
अनुपम नवीन उल्लासमय
मृदुमय प्रस्फुटित शत कोमलता
अंचल से बिखरे परिमलमय.

अदृश्य कभी मुखरित उस पल
भृंग-मधुप गुन्जारों में
स्नेहिल अनूप सुकुमार द्युति
तरंगित मुखरित मृदु रागों में.

सौरभ के कमनीय भार से
झुकी कली चितवन कैसी
उल्लास पगी अभिनव आभा
विस्मित मुग्ध नैनों में बसी.

3

वो यामिनी-गंधा जगने लगी

लख आई अब तो विभावरी
        वो यामिनी गंधा जगने लगी
मंद मदिर नयन पट खोले
        मुखरित भीनी-भीनी अलसाई

छवि मंजुल गंध- सुगंध मदिर
        अधरों से सुरभि-सौरभ बिखरें
कोमल स्वप्निल परिमल द्युति
        मृदु मंद-मंद ही बिखरे.

चपल अधर दल गुन्जित से
        गन्ध स्निग्ध मदिर परिमल
आई पवन समीरों की डाली
        ले गई सौरभ मधु साज सकल.

नीलांगन के तारों ने भी
        सुन ली, सुरभि भीनी रुनझुन
झिलमिल झिलमिल नयनों से तकती
        कब परिमल की सौगात मिले.

सरस तरंगें मृदु सुरभि की
        प्रतिपल अभिनव सजती जाती
लिये अंचल में माधुर्य नवल
        वसुधा सिंचित है किये जाती.

4

अरुण अधर चितवन

दहक रहे पलाश
तेरे अधरों पर आज
नाजुक कमल पंखड़ियों से
झरती परिमल नव गंध साज.

सुर्ख अरुण वर्ण कमलों में
अभिलषित पराग रच बस रहे
अतिशय उल्लास आवेश से
स्फुटित सुरभित हैं, पुलक रहे.

निर्निमेष नयनों से तकती
कब से रही तू जिसे अपलक .
सहसा अवतरित जब छवि मृदु
उल्लसित मानस मृदुल तरंगें
उमड़ी अधरों तक आई पुलक

लावण्य सरस अनुपम आभा
अनुभूत हुई, जब अन्तःपुर में
सकुचाई मन ही मन तू है
कमनीय सहज-सलज-चितवन
कोमल लोल-लघु लहरों सी
बह रही अधरों से अविरल.

प्रमुदित कोमल मन साजों ने
अभिनन्दन किया, जब तेरे मीत का
ताल-तरल मृदु-लय से बजती
अधरों पर ललित रंग लाई है.

प्रिया के पलकों पर पुलकित
स्वप्निल तारों का संसार
वही सुआश-लाष, अनुराग-संग
कोमलतम अभिनव ललित श्रृंगार.

नव प्रीति लता व़ल्लरी
अति लाज वश शरमा गई
भावातिरेक वश मुखरित हुए
अनगिन सहज हिय-राग मधुर

5

मै मुक्त छन्द, उन्मुक्त पवन

मै मुक्त-छन्द, उन्मुक्त पवन
सुरभि समीर मलयानिल हूँ
उन्मुक्त विहार मेरे पंखों पर
चपला की गति, चंचल सरिता.

मै गंध माधुरी परिमल
पुनीत शैशव सरला भी
साकार मुखर मृदु कल्पना
अव्यक्त अस्पष्ट छाया तन भी.

मै सौरभ सुषमा अभिलाषा
सौम्य मृदुल अभिनव आभा
प्रति छाव ठाँव भरती चलूँ
नित नव-जीवन की ही आशा.

कलि कलियों के अव गुण्ठन को
बनी प्रभात मै खोल रही
पल्लव हरित पत्रों पर शोभित
नुपूर रुनझुन सी बोल रही.

गूँज रहे मेरे मृदुल ताल पर
निखिल के सभी संगीत चपल
निशि भोर अरु अन्धकार में
विहँस रही मैं प्रतिपल अविरल.

झंकृत होती तट-तल पर कभी
हूं तरल तरंगों में निमग्न
स्वर-सरित बनी उपवन-कानन
इस मधुरिम पल में गूँज रही
तिरती निस्सीम व्योम में उस पल
घन घटाओं पर मैं डोल रही.

नीरव विभावरी, ज्योत्सना द्युति में
शशि किरणों को अंचल में लिये
स्वप्निल भावों में खोई विह्वल
एक मुग्धा का श्रृंगार करूँ मैं.

अलि-अलक, कृष्ण राशि में ही
रह जाऊँ कभी उलझ विहँस
स्मृति विलास मृदु ज्योति जला
नवोल्लास निरुपम दे जाऊं उसे.

निष्पलक सहज चितवन पर लिये
शशि-विभु छवि रही प्रिय की ही
विरहा-विकलित वह अति ही निराश
सुगन्ध मदिर परिमल सी बनी
मैं दिला रही, उसे एक आश.

घोर निशीथ रजनी में लिये
चपल पंखों पर अपने
सघन घन घटाएं बहुल
द्रुतमय चंचला गति बनी
पहुंचाती उसे भी हूं, उस पार
अति प्रलय मचाते, विप्लव बरसते
तब भी रहती, मैं उसके पास.

श्रान्त धरा जब रात ढले
प्रसुप्ति में खो जाती है
चेतन समीर स्पन्दन प्राणों की
बनी बैठी रहूं, मृदु मंद बहूँ.

हरिताम्र सघन पुरवाई तले
बाला सुषुप्त अति सहज सरल
उमंग चपल मधु–राग बनी
उर में भर जाती प्रीति पराग.

महा प्रलय के शोर मचाती
जलधि जब बहती अति रौद्र
हाहाकार दिखाती जग को
क्रुध हुई भी करती हास
उन प्रलय काल रातों में
सहती मैं भी, उसकी त्रास.

लघु संकीर्ण दौर्बल्य भाव से
मानवता रोती सिसक-सिसक
पशुवत् हीन कर्मों से जब
जन ही जन का करता संहार.
उस पल भी पास रही बहती
नयनों में भरे घन अश्रु–नाद.

मृदु मानस सौहार्द वीणा पर
ममत्व समता का राग उठे
जगती प्रीति-पियूष सलिला से
स्निग्ध सरस सुरभित सी रहे.

कमनीय सुमन पराग साज
समाये अपने अंकों में
दिंक्-दिशाओं में अभिनव
मनोरंजनी प्रीत सुनाती हूं.

निशा यामिनी विभव रहे,
अनुपम झिलमिल तारों की छवि
नव जीवन-उल्लास ज्योति से
बसुन्धरा अप्रतिम निखर उठे

प्रति भोर खिले,
विहँसे कलियाँ
शबनम मुक्ता,
अविरल झलकें
चैतन्य विमल प्रकाश से
अन्तर्आभा उज्जवल प्रतिपल.

सुप्रीत भाव, मधुरिम सी छवि
जग विहँस उठे, उपवन भी खिलें
यही आस बसाए मन में
अपनी मैं निज कर्मों में प्रतिपल
तन्मय, तत्पर, तल्लीन रहूं.

6

रजनी अलसाई
नभ साज सजा रही

अलसाई रजनी कब की
सौरभ मद ढाल गई
तारों की सेज बिछा,
गीत स्वप्निल कह गई.

तिमिर मध्य मधुर दिखा
मोहक आकाश़ कुसुम
भावोल्लास की भीनी
रागिनी है छेड़ गई.

अंचल में भामिनी
स्वप्निल अभिलाष के
विस्मृत अनुराग की
लावन्य छवि लास की
....कल्पना थी भर लाई.

मलयज की रागिनी
सौरभ भी संग लाई
मोहिनी अनुरागिनी
कल्पना सी सज आई.

तारक सुमन गूँथ-गूँथ
झिलमिल अनुराग फूल
पुलक सुहास भरी
नभ साज रही.

7

कब आन बसे किन घड़ियों में

नयनों के सितासित लहरों पर
आई तिरती, एक छ़वि जो है
भ़ोर खिले, निशि–शाम ढले
सुरभित रहती, पुलकित प्रतिपल.

कब आन बसी किन घड़ियों में
मृदु मानस मराल के पंखों पर
रहते स्पन्दित है वही सुर
उठते–गिरते साँसों की तरह.

सुआनन के लावण्य ललित में
सम्मोहक तारों से बँधा है, मन
जैसे कली अंक में पड़ी शबनम
किरण–लहरियों से सुस्मित चितवन.

विस्मृत से हुये सभी गीत पुराने
कहीं दूर देश की सुरभि–समीर
मुग्ध, अपलक इस ओर तके
मानस–वीना के स्वर लहरों में
झंकृत पल–पल इक वही रागिनी.

तिमिर घने इस एकाकी वन में
हुई अभिनव प्रीति–द्युति की आभा
शुभ्रालोक सुहाग से निखरी अब
है नव–जीवन की कनक–प्रभा.

अनुराग–लय प्रीति साज रंग
गूंज रही उर–हिय में अविरल
अलस सुर्ख स्मिति चपलित
विहँसे उल्लसित अधरों से कोमल.

विस्फारित से सभी सोच रहे
किस कारण भावावेश में
मुग्धा बनी यह सरल बाला
कमनीय स्नेह मूरत अवतरित लिये
सपनों की नवल मोहिनी सलिला.

प्रीति–कली मन-भ्रमर भृंग
भरमाई अलि–गुन्जन में विह्वल
दिक्–काल रंग सब दिये भुला
विमुग्ध, मग्न अतिशय चंचल.

पल–पल पलकों पर छाया
कल्पित स्वप्निल संसार अब
जैसे नील–घन रातों में हुई
तारिक तारों की झिलमिल हों.

8

शाम होने को आई

शाम होने को आई
अरुणिम स्वर्णिम किरण जाल लिये
सूर्य जा रहा क्षितिज की ओर
प्रखर प्रभा कुछ मंद हुई
चित्रपटल पर आसमान के
नीलम की सी छवि छाई
शाम होने को आई.

शुभ्र धवल पट पर अम्बर के
गहन नील कलेवर चढ़ता जाये
उड़ते–उड़ते विहंगों की टोली
गुंजन कलरव से कहती जाये
सूर्य अस्त हुये, अब बारी रात की आई.
शाम होने को आई.

श्याम नील सलिला हुई नभ है
मनोहारिनी अभिनव छवि छाई
तारिक तारों के सुमन मनोहर
झिलमिल–झिलमिल खिल जाने की
घड़ी अब ही है आई
शाम होने को आई.

मदिर विलास श्रृंगार अनूप
सौंदर्य स्वप्निल सी द्युति–प्रभा
अभिषेक कर रही है नभ का
इत–उत घन श्यामल नील घटा
विचरण कर रहे, स्वच्छन्द–मत्तंग
विविध ललित रंगों से भीगें
अति पुलक भरे, आहलाद –मग्न
मृदु परिमलमय मलयालिन
कह गई है उनसे भी
दिनमणि अस्ताचल को ढले
है शाम होने को आई.

सन्ध्या–सुन्दरी के स्वागतार्थ
भाव–सज्जा से भींग उठी
छवि नभ वसुधा की स्वप्निल–मंजुल
मंद मधुरिम कोमल से गान
हो उठे सहसा मुखरित चंचल
अनुपम स्वर लहरी सी है छाई
शाम होने को आई.

9

कहाँ हुआ है अर्न्तधान

किसने फैलाया है अपरिमित
नीले अम्बर का वितान
रच प्रति लहरों में चपलित गुन्जन
कहां हुआ है अर्न्तधान.

कोमलतम कलियों में माधुरी
किसने आ भरी अनजान
सस्मित चितवन से अपनी
मोहित करता पल–पल सुजान.

किस अपरिचित ठाँव से है आया
लिये अनगिन मंजुलमय उपहार
द्युतिमय झिलमिल तारक चंचल
इन्द्रधनुषी सुन्दर सुकुमार.

सौरभ की यह पाँति मनोहर
कमनीय रच गया है कौन प्रात
तुहिन–बिन्दु में है मुसकाती
किसकी मधुरिम कल्पना अज्ञात.

पुलक भरी परिमल अभिसिंचित
मलय–मृदुल लहरों के भार
अर्द्धस्फुटित अधर कली मुखर
विहँस उठी, सुषमा अभिसार.

वह कौन है जिसने सजाई
कुसुमित मल्लिका अभिराम
बलवती अपरिमित वेग लिये
निर्झरिणी बहती उद्दाम.

विस्मय से भरी मैं देख रही
अलौकिक सुषमा छविमान
नीरव, चंचल, चपल मोहिनी
स्वप्निल कल्पना के परिधान.

नित नूतन स्वर्णिम विहान
स्मित में जिसके है खिलती
इच्छा विलास से ही जिसके
मधुमास छटा पल में सजती.

देखूं भी उस कला निधि की
नव निरुपम कोमल झंकार
दिशि–दिशि में फैली राग निधि को
भर निज अंकों में साकार.

(10)

जो भूले से भी तुम आ जाते

जो भूल से भी तुम आ जाते
ये नयन दीप तो जल जाते
मुसकाते गाते अधर विहँस
पल भर को तो खिल आते
जो भूले से भी तुम आ जाते.

चितवन सहज मृदु आनन लरव
उद्गार कलित कल्पना के कोमल
धवल शुभ्र झिलमिल–झिलमिल
फिर नयनों में झलके छलके आते.
जो भूले से भी तुम आ जाते.

मंजुल उन घड़ियों की भाषा
अति मधुर प्रीत–भावों की सरस
अभिसिंचित स्निग्ध नवल प्रतिपल
अतीत–यवनिका में विस्मृत जो भई
आज पुनः इस क्षण में हम
फिर से तो पढ़ पाते.
जो भूले से भी तुम आ जाते.

नभ द्युति शशि सुन्दर छवि सी
अपनी स्वप्निल परिमल झाँकियाँ
कल्पना से रचे नभ पर वितान
क्षण भर को फिर लख पाते.
जो भूले से भी तुम आ जाते.

अनुराग सरस स्निग्ध वारिधि
कैसी विभव उमड़ती थी
उल्लास सुमन उत्पल दल के
अरुणाभ मंजुल थे सजे रहे
उन सरसिह पंखड़ियों की ललक
आभा परिमल सौरभ की झलक
अभिनव फिर से झलके आते.
जो एक बार भी तुम
भूले से ही फिर आ जाते.

(11)

छवि नित–नूतन रख पाती हो, कैसे?

कली सुमन से पूछा था
मैने इक बार कभी
कैसे सुस्मित परिधान नवल
नित–नूतन रख पाती हो, छवि.

सम्मोहन सी स्वप्निल कोमल
चितवन कमनीय अतिशय सुकुमार
स्फुरित जग के कण–कण में तुझसे
सौरभ सुमधुर स्निग्ध अपार.

भीषण तपती वसुन्धरा
कभी कम्पित शिशिर यामिनी हैं
अनवरत विप्लव बरसातों में भी
कैसे प्रशान्त मृदु रह पाती हो ?

अपरिमित उल्लास परिहास–लास
हो रहा गुन्जित मुखरित प्रांगण
हुई भृकुटि–वंकिम जब काल–चक्र की
निरुपाय विवश दारुण क्रन्दन.

द्वि धारों में जीवन–नैया
कंपित–कँपित बहती जाती
नाना रूपों में अदृश्य–प्रकट
लख चित्र–विचित्र पाती कैसे हो?

कैसे प्रतिपल स्नेहिल झिलमिल
भाव निज–पलकों पर सँवार
सौन्दर्य मूर्त्त साकार स्वप्निल
रहती हो तुम शुचि अविकार.

निशि-दिन, हर–क्षिन अनुप्रेरित रहती
माधुर्य भरे किन भावों से
जगती के प्राणों में भरते.
राग तेरे नव–जीवन कैसे ?

गहन विषम दुद्दर्ष काल में कैसे
उज्जवल स्फुटित स्मित तेरी
करती अश्रु–स्नात नयनों में अंकित
छवि विभु मृदु उल्लास भरी.

विहँस मदिर एक मधुरिम गुन्जन
प्रतिपल अविरल परिमल भाषा
आलोक–किरण कोई तिमिर–मध्य
नव–कल्पना, जीवन–अभिलाषा

कब निश्वासों से तू विकल हुई
करुण, मर्मस्पर्शी फिर भी
स्नेहिल संस्पर्श से अपने रही
अविरल निधि करुणा बिखेरती.

कण–कण में जग के है तूने
सौरभ–दीप जलाये, हर क्षिन
रच अपनी कल्पना से शत-शत
सुषमा अभिनव मोहक नवीन.

स्वर्णिम विहान में जग तेरे
नयन कोमल कमनीय नवजात
पुलकित मलय-वीचि आलोड़ित
निरुपम विलास मोहिनी प्रति-प्रात.

अवतरित ज्योत्सना रजत-द्युति में
प्रदीप्त मृदु-आनन, नवीन
निरख अपलक रह जाती ठगी
विमुग्ध शशि, द्वि पल को लीन.

लिये अधरों पर अपने सहज
स्वप्निल सरस सौम्य मुसकान
कहा, उसने मुझसे उस क्षण
समुचित शब्दों में समाधान.

कैसे हो पायेगी, सुषमा मेरी
पल–घड़ियों के संग क्षीण
शत-शत कल्पना की मंजुलमय
वारिधि अगाध जो है उर में.

अपलक निज-नयनों से सदा
निहारती स्वप्निल सुषमा हूं, मै
झलक मृदु-अभिलाषों की ही
छवि कोमल-विलास बन आई है.

नव-आस्था, नव ज्योति की
ज्योति उर में है जली
मृदु कल्पना कल्याण परिमल
करुणा स्नेह ममत्व पली.

दंभ नहीं, मिथ्याभियान नहीं
मै अति लघु-काय, कोमल कलिका
चाहूँ, प्रतिपल ही बनी रहूं
स्मिताभ, मधुर सुमन-मलिका.

लख सौरभ-आलोक मूर्त्त सन्मुख
विदग्ध नैराश्य उर में स्वप्निल
मृदु भावों की विस्मृत स्मित
अभिप्रेरित हो आये, शायद.

प्रकृति के नाना रूपों से
पहचान अभिन्न हो आई, अपनी
जब आदर्शालोक जले उर में
कम्पित शिशिर कर पाती नहीं.

जीवन-मरण, उल्लास गीत
आहलाद-हास, निश्वास
स्वप्न-कोमल, छवि शैशव अभिराम
सौंदर्य, बीभत्स अरु गति हृास.

अपरिहार्य सकल रुप जीवन के
जग पंक खिला जीवन-जलजात
अति गूढ़ प्रश्न मति लघु अपनी
बस कर्म-प्रीति ही मुझको ज्ञात

छवि-रुप साकार करने अपनी
कल्पना को, अविरत रहती मै तल्लीन
स्नेहिल सुधा-परिमल का ही
देती दान, औदार्य नवीन.

अपना जीवन है पूर्ण समर्पित
जगती-जीवन के साधन में
अभिलाष बनी स्मित अवलोकित
शायद रहती अक्षुण्ण आनन में.

12

उल्लास पुलक घिर-घिर छाये

स्पन्दन से कलियों की
मृदु रुनझुन सौरभ गुन्जार छिड़े
पल निमिष में ही दृगों ने
मंजुल अभिवन उद्‌गार कहे.

कब सुमन ने थी सजाई
अभिलाषों के दीप अपने
स्निग्धता में स्नेह के
झंकार कितने थे छिड़े.

दृगों में ही बन गये
थे अमिट भावों के महल
पल-पल उमंगों ने सजाये
स्वप्न के श्रृंगार कोमल.

स्वर सरित मृदु रागिनी
अनुराग के संसार बन
काल निमिष अंकित करते
परिमल सौरभ संचार बन.

अभिराम चितवन की झलक
अंगराग नवल नव कुसुमों के
अभिषेक मृदुल स्वर्णिम ललित
स्मित पुलकित गुन्जार भरे.

उल्लास पुलक घिर-घिर छाई
नभ मानस के पट मंजुल'
प्रति साँसों के तार पर
अंकित छवि कल्पित कोमल.

सजल स्निग्ध जलजात प्रीति के
स्नेह सुधा सलिला उल्लसित
वीचि झंकृत गुन्जारों में
अनुपम परिमल विलास मुखरित.

13

छलक रहा, प्रिय का ही प्यार

अर्द्धनिमीलित नयन वृन्तों पर
सौरभ विलास मद अनुपम राग
नलिन नवल सरसिज कोरों से
छलक रहा, प्रिय का ही प्यार.

स्नेह दीप पलकों पर झिलमिल
अर्न्तमन की ज्योति निखर है
शुचि स्मित मोहिनी ज्योत्सना
हो रही प्रदीप्त अविरल अभिनव है.

गुन्जित हो रही अनुराग-रागिनी
अभिसिंचित उन शशि-किरणों से
जिस प्रीति छवि से उर तेरा
उमग अतिशय उल्लासमग्न है.

पिकबयनी मृदु पंचम रागिनी
सुना रही तुझे है गान वही
पावस की भीगीं रातें सुरभित
स्निग्ध सरस रसधारों से
सम्मोहित किये जाती_है, तुझे.

वासन्ती हवाएँ दूर से आईं संजोये
केसरिया डाली में सौगात तेरी
झिलमिल–झिलमिल रातों में विहँसती
छवि अवतरित है, प्रिय की ही तेरी.

काली काली-रातों का ज़ब
चंदा करता अभिषेक है
नूतन ललित कल्पना में अपनी
अग-जग बिसरा खो जाती हो.

स्वप्निल कल्पना से पुलक रजनी
कर जाती है श्रृंगार सजल
घन अलक तेरी जुल्फों में सजा
तारें अनगिन कलियाँ कोमल
और नयनों में तेरे दे जाती है
सपनों का सुखद संसार नवल.

तारों की ऊपर छाँव सजे
मल्लिका कुसुमों की शय्या
प्रशान्त नीरव विभावरी में
अलसित, स्निग्ध कमनीय चितवन.

क्षिन-क्षिन ही नूतन मंजुलमय
स्वप्निल सुकोमल सा अभिसार
भाव-अधर नयनों से उमड़
छलक रहा प्रिय का ही प्यार.

14

निशा-परी क्यों तूने अपना

निशा-परी क्यों तूने अपना
श्यामल-अंचल छिपा लिया
मृदुमय अभिराम सुकोमल सा
स्नेहिल संसार है उठा लिया.

चकोर बनी शशि-प्रभा को
अवलोकन करते द्वि घड़ी रही
तारक निरुपम नीलम सी छवि
थी विमुग्ध निहारती मैं तो रही.

कहाँ गहन-तम जीवन का
अभी दीपित भी हो पाया था
झिलमिल स्वप्निल-किरणों ने ही
स्निग्धता से मुझको था लुभाया.

तरल-तरंगित मुग्ध हुई मैं
नीले अम्बर की छाया में
आलोकित मंजुल सुधांशु-विभामय
माधुर्य मोहिनी माया में.

अपनी कम्पित निश्वासें व्यथित
भूल जरा हँस पाई थी, मैं
रजत चांदनी लहरों से
सम्मोहित हो मुसकाई थी.

पावस-निर्झरिणी नयनों में
द्युति सुषमा की सज पाई थी
राशि-राशि मृदुता की निधि
क्यों क्षिन पल को देने आई थी.

मिल पाया निमिष पल ही मुझे
परित्राण जग की निर्ममता से
मिथ्यारोप, स्वार्थपरता, विषाद
निरुपाय विकल विवशता से.

थे म्लान अधरों ने कहे
उर-भाव अस्फुट मृदु सुकुमार
निमिष भर ही मैने किया
कोमलतम स्वप्निल सा अभिसार.

अनिमिष पलकों पर उतर
आई छवि अभिलाष की
चिर्-तृषित नैनों ने देखी
चितवन नवल अनुराग की.

मधुमय नीरवता में पल भर
अस्फुट गीतक गुन्जार बने थे
जगमग नभ की कलियों ने
मर्मर से मेरे राग सुने थे.

प्रशान्त ज्योत्सना से विदग्ध
मानस अभिसिंचित शीतल-कोमल
मृदु स्वप्नों से भर आया अंचल
उल्लास ललित अभिनव उज्जवल.

15

काकली, पिकबयनी तू गाती ही भली.

काकली पिकबयनी तू गाती ही भली
कल गान की हर कूक, हर तान है भली.

मंद मदिर तान तेरी
पियूष सलिला स्निग्ध सुरभि
मृदु मास फाग में रंग ललित
खिल आते तेरे गीतों पर ही.
अलमस्त भीनी वासन्ती ब्यारें.
रास रचाती, गीतों से तेरी.

वसुन्धरा अपनी हर्ष उमंगे
तेरे गीतों में भर देती है
भर प्रसून कलियों की मृदु माधुरी
तेरी तान मृदुल कर देती है.

कलित तान तरंगों से छिड़ती
मलयज समीर रागिनी गुन्जित
लख निज भाव झंकृत गीतों में
वसुधा अतिशय प्रमुदित उल्लसित.

तू, जो म्लान सी भी हो गई
धरणी भी कुम्हला जायेगी
नयनों की उदासी से तेरे
वह भी अति दुःख पायेगी.

करुणामयी के नयन विकल
विह्वल से हुये जब बरस पड़े
उस क्षण की कारुण्यता से
तू, भी तो अति दुःख पायेगी.

काकली पिकबयनी तू गाती ही भली.
मृदु गान की हर कूक, हर तान है भली.

नन्दन कानन के वैभव विलास
तू ही नभ तक पहुँचाती है
तेरे मधुर लहरों पर ही
सरिता भी उमड़ी आती है.
झम-झम विभव स्निग्ध गुन्जन
अनुपम चपलित सी रागिनी
पल-पल नूतन नव रासों को
दिक्-दिशाओं में तू ही ले जाती.

तू , जो न आज गायेगी
मंजुलमय सुरभित अपनी तान
झंकृत वारिधि रागिनी कोमल
म्लान शिथिल हो आयेंगे.

पंचम स्वर आभा से ही
कलियाँ भी घूँघट खोलें
दल किसलय नव डालों पर
अलसा से रहे दृग खोले.

परिमल लुब्ध अलि गुंजन रव
मुखर मंद मदिर ही लहरें
मलय पवन के मन्द बोल
पिक माधुरी सुन ही विहँसे.

अभिराम ललित कल्पना
अव्यक्त 'गूँज' अनगिन अधरों के
अग-जग सम्मोहित हो जाते
तेरे अधरों से जब गीत बहे.

5953

(16)

प्रिये, एक बार फिर

घन पटल श्याम
नभ नील गगन के
बाल इन्दु शशि छवि द्युति, तुम
मम मन वारिधि सलिला प्रद्युम्न
सरसिज सित श्रेणी हो, तुम.

प्रिये एक बार फिर वही
स्मित चितवन अतीत की बन जाओ
प्रिये, एक बार वही प्रफुल्लित
बहु भाव तरंगों में बहती
स्नेहिल दीप मालिका से झिलमिल छा जाओ.

लहर-लहर प्रति वीचि में गुन्जित
तरल प्रीत अमिय सुधा तेरी
अकूल अगाध वारिधि में
रही पारिजात सुमन सी प्रमुदित तिरती.

नभ में छाया घटाटोपघन
तिमिर अँधियारा काली रातों का
देख न पाई मैं तो कभी
सुधांशु तेरी मृदुल आभा जो
उर में रही प्रतिपल प्रदीप्त.

ज्योत्सना सुहाग सुमन्द सुरभि में
प्रतिबिम्बित अपनी कल्पना
लावन्यमय विपुल बहुल
अनुराग रंजित नव व्यंजना.

अपूर्व मोहक चेतनता से
स्नेह रश्मि की ज्योति मिली
झिलमिल से तारिक किरणों को
मन-दर्पण में अपने छिपा लिया.

सुललित स्वप्निल सुकोमल
प्रभासित हुई अनुराग किरण से
मृदु प्रीत कमल की पंखड़ियाँ
कली घूँघट अपना खोल रही.

उन भावों की रहे याद तुझे
उन लहरों की ही अनुहारि
फिर एक बार आज प्रिये
मानस-सलिला में तुम मेरे
वारिज अम्बुज बन खिल आओ.
सरित लहरें हर तान में
तुझको पुकारती है
मृदुल मलय के कम्पन में
गूँज रहा है, गान वही.

वही मंजुल सुर लहरी झंकृत गुन्जित
अधरों से जो तेरे आई थी
उन गीतों की ही माधुरी,
इस पल में तुझे बुलाती है.

सौरभ सिंचित मृदु तान लिये
प्रिये, एक बार फिर
स्मित चितवन अतीत की बन जाओ.

17

सत्य

चिर-अपरिचित रही सदा मै
तम-किरण से ज्यों अनजान
पर हूं अर्न्तनिहित विदित
सौरभ सुमन सुजान.

कौतूहल कभी पल में
तट तक मेरे ले आती
सुधि अग-जग काल की
बिसरा एकाकार हो जाती.

मुदित विस्मय से निहार
सौम्य माधुरी उज्जवल
निर्निमेष पलकों में अपने
भर लेते सौरभ परिमल

रहस्यमय अनजान एक कल्पना
निराकार भी हूं साकार
अनन्त नीलाकाश जिसका
पा न सका विस्तार.

वही नन्ही कली बनी
सुकोमल सुकुमार
मृदु कमनीयता से कह जाती
"मै हूं सत्य साकार."

सांसों के तारों में पल-पल
बहती स्पन्दित रागिनी
नव कल्पना ज्योति निशा की
मृदु छवि मैं ही बनी.

अनजान सी रहती कभी
अस्पष्ट छायातन आकार
प्रखर प्रात स्वर्णिम आभा
छवि-रूप बना जाती संसार.

जगा परिचित आह्वान से
स्नेह-सिक्त अनुराग
नीरवता में एक करुण-रागिनी
गा उठती है विहाग.

उल्लास से अनुराग के
रच बन्ध खुल-खुल जागते
प्रीति छवि उर की मधुर
सलिला अर्न्त उर में रही.

रश्मि-किरण जाल स्वर्णिम
आलोकित नूतन प्रभात
ओढ़े अंधियारे की चादर
आई तम की रात.

ज्योतिमर्य अभिनव प्रकाश
दामिनी घन तड़ित-विलास
मर्म व्यथित आहों से तिरती
करुण विकल निश्वास.

18

अभिनन्दन किन स्वप्निल भावों के

अभिनन्दन किन स्वप्निल भावों के
सजाये तूने ये अनुपम साज
स्निग्ध वीचियों में मृदुमय
सँभाले सौरभ के कुसुम हार.

तरंगिनी सलिला अनुरागिनी
प्रफुल्ल चितवन मधुर मोहिनी
सरस मृदु लय गूंज रहे
झंकृत चपल नूपुरों से भीनी.

चंचल पुलकित लहरों से उठती
झंकार सरस सुन्दर मंजुल
सुकुमार समीर लहरों से
उठती रागिनी प्रतिपल.

सुवर्ण रश्मि प्रभा लहरों पर
श्रृंगार विभव कोमल रच जाती
लहर उर्मियों में पहना अभिनव
स्वर्णलंकारों की सुषमा शोभा.

इन्दीवर वारिज अधरों से
प्रस्फुटित तेरे उर की आशा
विकसित सुमन दल मधुर बने
उद्‌गार उत्फुल्ल पुलक भाषा

हरित-हरित नव पल्लव दल
इत-उत लहरों पर मचल
तरुण-अरुण चपल तरंगित
उल्लास मग्न करतें हैं नृत्य.

सुरभित कोमल वारिधि लहर
विभव सौरभ नव उंग सजाये
समधुर गुन्जित अलस-ध्वनि
झंकृत परिमलमय बहती जाये.

19

तरणी हो रही, स्वयं ही मैं तो

मृदु राग अभिलाष के रंगों को
नवल नलिनी हरित पत्र पर
अनुराग ललित वर्णों में,
किया है अंकित मैंने.

अति ललित भाव अनुराग सज रहे
माधुर्य वरन् अरुणिम स्वप्निल
स्निग्ध पावन प्रीति सलिला
अभिराम सरस प्रतिपल-परिमल.

हृत्-वीना से झंकृत अस्फुट
भाव सरस अविरल विह्वल
अभिलाष लास से भीगें नयना
सम्मोहित से हैं डोल रहे.

प्रीत-सुषमा-चितवन आशा
बह रही अधरों से अन्माद बन
तरणी हो रही, स्वयं ही मैं तो
तरंगायमान स्वप्निल सी उन्मन.

स्मृति मलयज सौरभ पराग से
उल्लसित सिंचित विमुग्ध अनजान
अन्तः सलिला भावों की उमड़
गुन्जित मनोरंजिनी अम्लान

मधुमास प्रीत मृदु तान सुकोमल
कोर-कोर से स्फुटित चपलित
चिर-इच्छित मधुरिम कल्पना
सम्मुख मंजुलमय छवि मीत.

20

हृत्-मणियों की पहचान आज हम भूल गये

स्नेहिल प्रीत सौहार्द रत्नों की
पहचान आाज हम भूल गये
तभी पग-पग पर बिखरे मोती रहते
हम निर्धन धन-हीन बने रहते.

कोमलतम स्निग्ध तागे में झिलमिल
प्रीत मुक्ता नहीं तो क्या है ?
दुर्गम अगम कालों में जिसकी
ज्योत्सना प्रतिपल उज्जवल छाई.

स्नेह शुभ्र मुक्ता दल यूँ
हृत्-सागर के अनमोल रत्न
अर्न्तमन की विमल शुचिता
उज्जवलतम ज्योति सी उमड़ी.

सुवर्ण तो है, एक पीला सा
धातु ही समझा लो कोई तुच्छ
अनमोल ममता मणियों के समक्ष
तो सकती इसकी मूल्य भी क्या ?
प्रीति ज्योति अभिनव अमन्द
ज्योतित अविरल प्रखर भव्य
प्रतिपल ही अभि सिंचित होती
अप्रतिम स्नेहिल माधुरी दिव्य

अनूप ममता करुणा रत्नों की
परख कौन कर पाये हैं
ममत्व भरे नयनों में हम
छवि समस्त जग की ही पाये हैं.

करुणा से भरे दो हाथ बढ़े
सुधा मधुरिम ज्योति आई
अविरल पुनीत उज्जवलता से
तमिस्त्रा सघन द्युतिमान हुई.

वृहत् रत्नों के पत्थर क्या
कभी इतने अमूल्य हो पायेंगे
मर्माहत व्यथित घड़ियों में जो
मृदु भावों के हमें हार मिले.

माधुर्य सिक्त स्निग्ध स्नेह रज्जु
क्या हीरक सी द्युतिमय नहीं रहती
विघ्न विकटमत काल में क्या
कल्पनातीत सौहार्द छवि नहीं झलकती ?

भौतिकता की मरीचिकाओं में
भरमाया मानव भूल गया
अभिराम स्नेहित भावों की
अपरिमित अपूर्व अमूल्यता.
करुणा की किरणों से पुलकित
अभिन्न मंजुलमय कोमलता.

तरुण अरुण किरणें बहती
अनुराग सिक्त लालित्य रंगी
पियूष स्नेहिल परिमल भावों को
तौल सकती चांदी है क्या?

अमूल्यतम हृत्-मणियों के बदले
पीले टुकड़े हैं हमने लिये
लघु अति इस अल्प ज्ञान पर
रो रही वसुधा अविरल, विह्वल.

उल्लसित द्वि नयनों के समक्ष
रत्नों की क्या होगी आभा
पत्थर ही समझते जो उनको
निधि मानवता तो न खो पाते

खो दी है मानवता महानिधि
अब भी यह जो समझ पाते
अंचल में समाये अपने हम
उल्लास हास, रंग भर लाते.

21

कहने को भूली कहानी....

कहने को एक भूली कहानी
सुरभि की रानी आई.
लिये परिमल के मृदु पंख पर
कमनीय कली प्रसून पत्र
अभिनव मंजुल छवि, आज
फिर से दिखाने आई

कहने को एक भूली कहानी
सुरभि की रानी आई.

गुनगुनाती मृदु मंद
विमुग्ध, विस्तृत स्वप्निल खोई
ललित राग, अभिलाष सरस
मृदुमय मंजुलमय गीति-लहरें
फिर से सुनाने आई
कहने को भूली कहानी.

जग जटिल प्रपंचों से व्यथित
सुषमा कोमलतम सरस छवि
हर्ष पुलक परिधान सजी
विस्मृत सी हो आई थी.
मृदु लयमान झंकृत होती
कुछ मधुर सुनाने ही आई.
कहने को एक भूली कहानी
सुरभि की रानी आई.

अन्धकार के अन्चल में
चपला चमक जैसे कभी
मृदु शुभ्र आलोक से
नभ ज्योतिमर्य कर जाती है.
चंचल लघु किरणों से अपनी
द्युति झिलमिल फैला जाती है.

सौरभ की लहरों से
मुखरित करती बिसरी
गीतों की लड़ी, रुनझुन झंकृत
पुलकित हुई है, लाई.

कर कन्ज में अपनी विविध
मल्लिका सुवास सिक्त
सौगात परिमल अनुपम संजोये
मुझकों ही देने आई है.

कहने को एक भूली कहनी
सुरभि की रानी आई.

उन्माद भरी न जाने किन
रंगों में रंगी आई
मत्तं-गन्ध-मधुर सौरभ अभिषिक्त
अभिसिंचित मुझे भी कर छाई.

(22)

निंदिया आई

अज्ञात किसी प्रदेश से आती
तिमिरांचल साये से निकलकर
मंद-मंद मदिर वसुधा पर छा जाती हो.

करुणामयी, जन-जन को लेकर
अपनी ममता की गोद में
उनके सपनों की लोरी सुना
अंक सुषुप्ति में भर जाती हो.

विश्रान्ति नीरव समीर सुधा सी
विस्मृति की तेरी छाव तले
अपूर्व प्रशान्ति सरसता से
धरा अनुरंजित निमग्न हो आई.

मन-मानस खोया स्वप्नों में
सपनों में मिल जाते बिछुड़े भी
कहीं इस कमनीय बाला को
दीख पड़ी अपनी प्रिय की छवि
कल्पित मिलन अभिलाष निखर
वो खड़ी अपलक, पुलक रही.

कहीं पथिक क्लान्त था श्रान्त हो रहा
तम गहन अगम जीवन पथ से
अंकों में तेरे सोया-खोया
पा गया स्वप्निल चिर-इच्छित गति.

नितान्त एकाकिनी है कहीं कोई
दिक्-परिवेश से भी हो अनभिज्ञ
तेरे मृदु अन्चल पल्लव तले
वह भी पा जाती संग कभी.

न जाने कितने नयन ऐसे
व्यथित, संतप्त गहन-क्लान्ति के
विशद घन-नीरद संभाले हुये
संतप्त उन नयनों को भी तू
आलोकित संसार दिखाती हो.
अभिराम छवि देख कर तिरता
उनमें भी है सुखद अनुराग
अधर उल्लसित अविरल से बरसते
मधुरिम कोमलतम प्रीति विहाग.

प्रातः सुवर्ण अरूण रश्मियों से
प्राची प्रांगण की ओर
होती है, ऊषा अलंकृत-भूषित
तब निःशब्द अति मृदुल गति से.
चली जाती हो, तुम चुपचाप.
अस्फुट मंद स्वरों में अपने
कह पुनः आने की बात.

23

मत झूम पायलिया राग बनी

मत झूम पायलिया रास बनी
कोई राग नहीं, मै गाऊँ क्या ?
मन बना पपीहा बोल रहा
सुन पिय सुन, तू आज कहाँ ?

कितने दिन बीते मास भए
न आई खबर कोई उत रुत से
सावन बरसे रसधार यहाँ
भरते अविरल विरहा के अनल.

नभ नील तरंगें डोल रही
इत उत है समीरें गान करें
वो तान भी ऐसी सह न सकूँ
विचलित हुई तेरी यादों से.

स्मृति तूलिका मानस-तट पर
दिखलाती अभिनव् चितवन भीनी
अन्तर से उठती करुण रागिनी
सिंचित असुँवन से कर जाती.

गहराते बादल सावन के
उमड़ घुमड़ चहुँ ओर से आये
काली रजनी है ऐसी भई
मसि धूम कजरारे नभ के साये.

सघन घन घोर, अटल चंचल
संग गर्जन-तर्जन विप्लव है बरसते
बोझिल पलकें, घन-अश्रु-भार
विंहस कैसे मै गान करूँ ?

मत झूम पायलिया रास बनी
कोई राग नहीं, मै गाऊं क्या ?

निशीथ तम नीरव रातों में
उद्वेलित भाव अब बोल उठे
इतने दिन बीते मास भए
सावन आया सब भींग रहे
विक्षिप्त विरह की ज्वाला में
निरुपाय विफल मै तड़प रही.

क्या आस दिलाऊँ, इन नैनों को
प्रतिपल ही तुझे है ढूंढ रहे
पथ-अगम दुर्गम राहों पर
तेरे चितवन की जो राह तके.

क्या भी कुछ कह पाऊँ मै
मधुरिम पग नुपूर रव को
सावन के रंग जो हुलस रहे
चपल विभव रास निमित्त
मंद-मदिर है थिरक रहे.

मत झूम पायलिया रास बनी
कोई राग नहीं, मै गाऊँ क्या ?

24

पल-पल भिगोती छा रही

कल्पना अनुराग की
झिलमिल तारों से सजी
मृदुतम ललित चितवन छवि
लावण्य सुधा से है भरी.
स्वप्निल स्नेहिल सुकोमल
नूतन किरण नव भाव की
पल-पल भिगोती छा रही
स्नेह-उर्म्मि राग की.
कमनीय सी कोमल कली
प्रात आये खिल रही
अमिय सौरभ माधुरी
अंचल सजाये पुलक रही.

स्मित कोमल पंखों पर
माधुर्य छवि मंजुल ललाम
सुषमा मकरन्द बिख़र
चहुँ ओर आ छाये अभिराम.
ऋतुराज की कल्पना उतर
इस पल है आ छांई
अनुराग पगी माधुर्य भरी
सुन मेरी मानस-पिक लहरी.

सुकुमार सुमन भावों के स्फुटित
विकसित हैं हो आये
मंद-मदिर स्वप्निल बयार
परिमल सौरभ श्रृंगार रची.
झंकृत गुन्जित गीतों सी
ध्वनि-प्रिय मुखरित आई
उन्जवल द्युतिमय तेरी चितवन
अभिराम विहंसती सज छाई.

धूमिल से लोचन दर्पण
ज्योति-प्रीत आभा उज्जवल
पल में झिलमिल-झिलमिल मंजुल
अनुराग किरण संग विहँस चपल.

25

शत-शत प्रकाश भर आऊँ

उज्जवल मृदुतम बन जाऊँ
स्नेह-स्नात् एक किरण छवि
जल-जल रह जाऊँ मै प्रतिपल
प्रदीप्त ज्वाला में जलती.

प्रति श्वासों में भर अपनी
नव-ज्योति, नव-किरण-आश
मुखरित ही करती रहूँ मै
धवल शुभ्र ज्योति प्रकाश.

तम से पार न पाती कैसे
स्नेह-अमिय अन्चल में अपने
नवोल्लास आलोक किरण
निज मानस भावों में घने.

दुःख-भार विकल मुरझाई कोमल
कली उद्विग्न है हो रही
किरण-ज्योति झिलमिल बिखरा
पथ ज्योतिमर्य कर आऊ मै.

चिर-इच्छित अभिलाष यही
जलती-जलती मै मिट जाऊँ
तम-की राहों में पल-पल
शत-शत उज्जवलता भर आऊँ.

26

ओ चन्दा तेरी चाँदनी

ओ चन्दा तेरी चाँदनी
सुहाती नहीं नव साज है
भीगें व्यथा, पलकों तले
ज्योति नहीं कोई राग है.

सपनों ने मेरे उमग कभी
थे ऐसे उड़ान भरे
तब तूने ही किरणों से अपने
थे उज्जवल मृदुल वितान रचे.

छाँव तले, दुकूल तले
स्वप्निल चन्द्रिका की सुहानी
अस्फ् [illegible]न ने धीमे-धीमे
रच डाली थी एक नई कहानी.

एक लोक रहा, वो काल रहा
परिमल अभिसिंचित मादकता
स्नेह पूरित उर से थी गुन्जित
अविरल अभिनव प्रीति सरसता.

तब भी थी, वो स्वप्निल ही
है आज भी वही रूप लिये
तब सम्मुख थी साकार छवि
प्रतिच्छित नयनों में आज बसी.

मृदुमय सौरभ वो मधुमास की
न जाने थी कैसे अभिसार
प्रस्फुटित राशि-राशि कलियों से नव
उल्लास की गुन्जन झंकार.

ध्वनि सुनी जब इन अपने
श्रवणा-पुटों न उस पल
तत्क्षण अधीर कल्पित सपने
विहँस मुसकाये कोमल.

कल्पना बनी अभिषेक रूप
श्रृंगार छवि नाना विलास
विस्मित सी मैं आप हुई
ज्योतिर्मय अभिनव विविध लास.

अंचल में अपनी सारी निधि
सँजो विभावरी ले आई
तारक-दल, चंचल कोमल
विभु इन्दु-प्रभा थी मुसकाई.

अरुण-धवल अभिलाष रूप
भाँति-भाँति मंजुल परिमल
श्रृंगार रचा अपने कर से
उपहार विपुल सुन्दर कोमल

गुन्जित वसुधा अम्बर श्यामल
कोमल पुलकित मृदुमय
मानस अभिनव आह्लाद पगा
पल-पल नूतन अनुरागमय.

(27)

अरुण बने कई स्वप्न-कोमल

मोर की किरणों के अंचल
अरुण बने कई स्वप्न कोमल
घनेरी तम की कालिमा हो
रही तरलित उज्जवल नवल.

जागृति की चिर-कल्पना
छवि बनती तम में कैसे
स्निग्धमय मृदु चितवन में उमग
अभिलाष के संसार विहँसे.

पुलक रचे प्राणों के सौरभ
अपरिमित मधुरिम गुन्जार
चिर-प्रतिच्छित स्वर्णिम विभा
आलोकित हो रहा संसार.

विह्वल चपल आह्लाद सरित
तरंगित मृदु उन्मादिनी '
बरबस उमड़ जाते नयन
अधरों से पुलकित रागिनी.

हास सबने थे सुने
झंकृत अभिनव साज से
मुग्धा मग्न मृदु नृत्यपरता
चंचल नवल उल्लास से.

हीरक के से पाँवड़े
झिलमिल नयनों में छिपी
अंकित म्लान अधरों पर सुभग
सुआगतम् की संचित निधि.

परिमल बने उर-भार कोमल
अभिसिंचित मृदु स्निग्ध प्रीत
नव किसलय सम आलोड़ित चंचल
मलय समीरों से सुरमित.

सुवर्ण ललित रश्मि लहरें
ज्योतित मानस मुग्ध पुलक
सौरभ सुहास सुषमा विपुल
अपरिमित वैभव संचित कर लूँ.

28

विहँस पड़ती नव गंध्र कली सी

मृदु गीतों की स्वर- सप्तिका
मलयानिल लहरों की सुरभि सी
स्मृति की यवनिका से उमड़
विहँस पड़ती नव गंध कली सी.

सलज्ज सुमन्द अनुराग सिक्त
कल्पना की अनुपम विभव तान
व्याकुल अधरों से स्फुट रहती
सहसा सरल मधुमय गान.

स्मृति-सौरभ-विलाससे जिसके सौसों में परिमल रच जाये
स्वप्निल उस चितवन की झलक
सम्मुख अपरिमित सुषमा लिये आये.

पुलकित इन पलकों पर झिलमिल
है उन नयनों की ही सहज स्मृति
निर्निमेष अपलक चहुँ ओर
निरखते मेरे नयना द्वि हैं.

सुरभि कलियों की संचित करके
मनहर सुगध रंग सजा लिया
पल-पल नूतन भाव सुमन निज
स्नेह-सुहृद को अपर्ण है किया.

अभिराम ललित सपनों की विभावरी
रच जाती उज्जवल झिलमिल तारिक है
उत्फुल्ल मृदु सुआनन की स्मृति
लाती सुरमित बहुमाल सुमन है.

स्मृति सुधा उर हिय में मेरे
चंचल चपलित हिलोरे लेती
प्रीत-राग गंध सुमनं विकसित
बह अधरों तक छलके उमड़े.

मधुरिम अति प्रीत सरस मेरी
कलि-कलिकाओं सी ही कोमल है
अविरल अमंद इस ज्याति पुन्ज से
मन-मानस निखरा ज्योतिर्मय है.

29

लिखनी थी एक पाती

कोमल कमल पत्रों पर
श्वेत मीत भावों के
अरुण सुर्ख वर्णों से
लिखनी थी एक पाती
....लिख न पाई मै.

नूपुर के ताल पर
कोकिल के गान सी

झंकृत मन तारों से
कुसुमों के साज पर
छेड़नी थी रागिनी–
....कर न पाई मै.

नीरव, निशीथ के
तिमिर अन्धकार में
दीपशिरवा सम करनी थी ज्योति–
....कर न पाई मै.

चंचल चपल दामिनी से
धावक मृगछौनों से
लेनी थी एक गति
तन्वंगी धारा से–
....ले न पाई मै.

30

एक प्रश्नः

व्याकुल विकल रो-रो मचल
है पूछ रही लहरें उमड़
तट-कूल किनारों से आती
अव्यक्त प्रश्नों की व्यथा विकल

उत्कर्ष स्नेह सौहार्द भाव की
थी यह रही वसुधा अपनी
शस्य श्यामला इस धरणी पर
ममत्व-प्रीत की छाव घनी.

अपनी थी वसुन्धरा अमिय सलिला
पावन-पुनीत नभ आंगन था
लघु मलीन-घृणित भावों के किसने
विष भरे हलाहल आ घोले.

धरती की शुचिता गरिमा को
रक्तों से किसने रंग डालें.
प्रति भोर-निशा, वह रहती म्लान
विदग्ध विक्षिप्त व्याकुल है मन.

अपनी इस वसुंधरा प्रांगण में
निर्भयता करती रही रास मत्तंग
अपनेपन के अन्चल तले विहँस
खिलती कलिकाएँ विभव अनुपम.

उल्लास राग के स्पन्दित स्वर थे
उमड़ चपलित उमंग सहर्ष
प्रतिपल अभिनव रास भरे थे
सुमधुरिम नूपुर कंकण से विहँस.

अभिलषित सुकोमल पग से किसने
हर लिये मंजुलमय नृत्य चपल.

दुर्द्धर्ष प्रपात तरंगों से भी
अविरल स्फुरित कोई मधुर विहाग
झंझापात प्रलय कालों में भी
मुखरित कोमल मृदुतम सुर राग.

लघु लोल लहरों पर चंचल
स्पंदित नव बोल मंद अविरल
निर्झरिनी की सोच्छवास लास पुलक
अधरों से छलके ज्यों परिमल.

प्रशान्त नीरव कालिन्दी
अनवरत प्रयत्नरत, चिन्तन में लीन
मनहर श्यामल कान्ति द्युति से
खुल विहँस पड़ी मदिर चितवन

आज म्लान, शान्त अवरुद्ध हुये
गरल अनल ताप से विकलित है.

किसने इन लहरों की विभा
निर्मम करों से ली है छीन
स्वर गीति के लहरों में किसने
विकल-वेदना अरु संताप भरे.

निर्मम बंधन से व्यथित हुई
आप्लवित करुणांबु नयनों से सघन
प्रतिपल ही बहते अश्रु यहां
आरक्त नयनों की करुण कथा.

लख निमिर तमिस्त्रा की रजनी
विमल ऊषा भी सकुंचा सी रही
फैले जन-मन के अँधियारे को
कैसे कर अब वह दूर करे.

स्वच्छन्द अबाध्य जीवन की गति
जन-जन में परस्पर प्रीति-रीति
कोकिल चहुँ-ओर थी गाती फिरी
गीतक नव-जीवन आह्लाद भरी
मंजुलमय कलित सरसता में
है किसने पिरोये व्यथा-नीर

ज्योत्सना सुहाग निशा में
करुणामयी पुलकित वसुंधरा
अभिनव जीवन-ज्योति के रचती रही, नूतन स्वप्न-लोक
ज्योतिमर्य अनुपम कल्पना में किसने
भर दिये चिन्तना अरु व्यथा-नीर.

(31)

सुआनन अवलोकन करते...

रही सदा पलकों पर मेरे
छवि तिरती तेरी अम्लान
मृदुमय, मोहक माधुर्य निधि
अपरिमित अविरल उपमान.

अपलक निहारते भी कब
श्रान्त थकित हो पाते है
सुआनन अवलोकन करते
नयना मेरे खो जाते है.

तुहिन-बिन्दु आलोड़ित जब
स्वर्णिम विहान किरणों से होती
विमुग्ध पुलक भर-भर ले आते
निज नयनों में सुषमा की निधि.

सस्मित पल्लव किसलय दल
मुखरित, मर्मरित उद्‌गार
व्याकुल उर में पड़ती है तब
स्निग्ध सौरभ की भीनी फुहार.

श्यामल अम्बर नील-नील
सुधांशु विमल तारिक झिलमिल
प्रतिपल उत्पल प्रस्फुटित धवल
सलिला अकूल स्वप्निल अंचल.

वारिद द्युतिमय पंखों पर
उड़ जाता है मानस मेरा
अकूल नभ-सिन्धु में फिर
गुन्जित झंकृत उल्लास मेरा.

मंजुल इन्द्रधनुषी मनहरता
में खो जाती कुछ पल हूँ
विप्लव घन-गर्जन तर्जन से
उद्वेलित सी उस पल हूँ, मैं.

विभावरी आती है स्नेहिल
लिये अन्चल में भाव-अपार.
शुचि-ज्योत्सना किरणों में
विहँस उठता मेरा संसार.

विपुल तेरी कल्पना अभिसार
सौरममयी मोहिनी सुकुमार
रसवन्ती स्निग्ध फुहारों मध्य, मै
पुलकित विमोहित करती विहार.

उमड़-घुमड़ जब हें लहराते
कारे-कजरारे जलधर
न जाने क्यों मृदु लास भरा
मानस शिखी सा होता नृत्य पर.

अस्फुट गीतक संग कलियों की
मै भी गुन्जित हो आती
आलोड़ित समीरांचल पंखों पर
चहुँ ओर मगन मँडराती.

तेरे कल्पना से भरे जगत में
मिला मुझे है स्नेह दान.
सरल पुनीत मृदुमय छवि तेरी
आज बनी मेरी मुसकान.

ध्वनित वही है, बोल सकल
जो मैने सीखे तुझसे
तारक-झिलमिल, मादक सुवास नव
नित-नूतन अभिनवता विकसे.

32

नभके सुरमई वितान....

नभ के सुरमई वितान अब
श्यामल सघन नील गहराये
स्निग्ध अतिशय मोहिनी
निशा भामिनी है आई.

जग के संधानों की चपलता
विलुप्त सकल अति श्रांत भए
कली-सुमन, अलि-दल गुन्जन
सुप्त निद्रित से भरमाये.

प्रशांत-शांत, नीख-अनन्त
वसुधा तल अम्बर कोमल
मंजुलमय अभिनव सुषमा झिलमिल
दीप्ति ज्योतिमर्य उज्जवल.

कल्पना के सुनहरे शीशमहल
अवतरित कैसे हो आये
क्या स्वप्न के मृदु भाव सम्मुख
साकार बने मुसकाये.

रुपहली ज्योति में अभिलषित
कितने मंजुल कोमल-नवल
समीरांचल सिहर मंद परिमल
बिखरें सौरभ अपरिमित अविरल.

अतिशय पुनीत यह मधुर मुदा
पल-पल प्रस्फुटित होते शतदल.
वारिधि श्यामल उर्म्मिल फेनिल
तरल-चपलित मृदु-रास नवल.

अभिराम नील. यवनिका मचल
कह रही, उर के अपने उद्‌गार
सुभग अनूप सुषमा लहर
धवल छवि सुस्मित सुकुमार.

भर आये क्यों नयना मेरे....

भर आये क्यों नयना मेरे
सावन के घन मेघा से
परिमलमय सुषमा सौरभ
अग-जग, कण-कण में छाये रहे
शत-शत कलियों के अधर वृन्द
मधुमय भीने मुसकाते रहे.

निरुपम, छवि स्वर्णिम वितान
थी अभी सजा गई प्रात विभा
सद्यः प्रस्फुटित सरसिज कोमल
सुकुमार मोहिनी थी आभा.

विहगों का कलरव भर-भर जाता
मानस में अपने स्पन्दन
निर्निमेष विमुग्धा सी थी बनी
पलकों में समाती सम्मोहन.

दर्पण मानस, निरुपम थी छवि
अंकित नैनों में मंजुल विहान
आलोकित आंगण, अरुणिम किरणें
ज्यातित कल्पनाएँ अनजान.
पल- निमिष सजाते कोमल-मंजुल
क्षण बिसरे कालों की निधियाँ
मोहक-विलास, सुतिमान-नवल
सुरभित परिमल, सुस्मित कलियाँ.

34

संग विभावरी के मै भी रही–

विभावरी के संग मै भी रही
मृदु सुमन बटोरती चाँदी के
यामिनी के रंग ली अनुपम
अपनी चुनरिया नीलम की.

झिलमिल-झिलमिल कुसुम पिराये
साज-सुमन श्रृंगार सजी
स्वप्निल नूतन अभिलाष लिये
सौरभ अभिसार मैने भी रची.

अभिराम निशा की छाव तले
ज्योत्सना-स्नात् वसुन्धरा पे
पारिजात मदिर गंधा-निशा की
मनहर मंज़ुल साज सजी है.

विहँस रही कलियाँ मदमाती
रंग सुमन विभव न जाये कहे
कल्पना की ऐसी हाट लगी
उपमा की चहुँ दिसि ढूंढ़ मची.

आलोड़ित वीचि चितवन पर
पियूष सुधा अविरल थी बरसती
मंजुल झिलमिल लहरों पर रजत
कुमुदिनी प्रमुदित मुदित मुसकाती.

अभिराम ज्योत्सना छवि मध्य
गुन्जित अनुपम स्वर थे मुखर
तट कूल किनारों से आती
रही मलयानिल सुरभि कैसी बिखर.

मानस मराल विभोर-मग्न
करता रुपहली सुषमा छवि-पान
नयनों में अपलक झलक रही.
कोमलतम उज्जवल मधुमय गान.

35

क्यों प्यार को मैंने चिरन्तन सत्य समझा था

यहां सूरज भी तो
हर रोज ढ़ल जाता है
शाश्वत सत्य चिरन्तन सा
ऐसा यहाँ कुछ भी नहीं.
प्यार को मैंने क्यों,
एक चिरन्तन सत्य समझा था.
सत्य की ज्योति प्रभा में क्यों
स्वप्न भाव अनुपम देखा था.

वृतियाँ मनुभाव की
पल-पल रही बदलती
ममता के अंक साये भी
बदल ही जाते हैं.
काल-पल क्षिन भी
रहते नहीं निरन्तर
रूत की हवाएँ काली घटाएँ
सब आती जाती है.
पल-पल झिलमिल चंचल तारे
निर्झर सरिता भी थिर तो नहीं.

शुभ्र सुधांशु पियूष प्रभा
प्रति निशि ही तो बदल रही
प्रशान्त प्रकृति स्निग्ध सौम्य
कभी विप्लव प्रलय मचाती है
सुआनन स्मित-रंजित मोहक
अश्रु-क्रुन्दन से भर जाते है.

आशा नव-जीवन प्रभा पुन्ज
अन्धकार- जाल में उलझ रहे
झंकृत गुन्जित रागिनी कोमल
अवरुद्ध क्लान्त हो जाती है.

शाश्वत, निरन्तर सत्य
ऐसा यहाँ कुछ भी नहीं
सूरज भी तो यहाँ
हर रोज ढ़ल जाता है
फिर क्यों प्यार को मैने एक,
चिरन्तन सत्य समझा था.

36

मैं अपनी ही स्नेह-बाती

शत-शत बन्धन विकट तम के
बने पाश राहों में पड़े
मृदु भाव सुमन सम कल्पना
आँधी प्रलय की ज्वाल देती

प्रतिकूल समीरों में अकम्पित ज्योति
मैं हूँ अपनी ही स्नेह-बाती

प्राण के प्रति तार से
दीप- शिखा पथ पर जलाती
मधुरिम स्नेह सौहार्द से
पथ दुर्गम सुमनमय मैं बनाती.

अक्षुण्ण सम्बल उर में सँजोये
मैं हूं अपनी ही स्नेह-बाती.

अभिलाष कोमल कल्पना को
चित्र उज्जवल आँक देती
तिमिर मध्य द्युति कल्पना किरण सी
मैं हूँ अपनी ही स्नेह बाती

उत्ताल आँधी बढ़ कभी
पथ रोक तो न पायेगी
संकल्प ही गति बन रही
कब तक दिशा अनजान होगी.

ज्वार में तरणी बना जब
ले आई हूँ, निज स्वयं को मैं
कोई प्रलय भी क्या तनिक
थाह मेरा पायेगी.

रजकण में बिखर रहे मोती
अनगिनत उज्जवल द्युतिमय
पलकों के झिलमिल सपने
पथ गहन सुगम है कर रहे.

सबल सम्बल की किरण
निज की अकम्पित जल रही
अकाट्य तम में दिशा
अपनी बनाती चल रही.
तम सघन पिघल रह जाये
आँधी प्रलय की भी शमित
सुकुमार ज्योति सहज मृदुल
सुस्मित छवि बन छायेगी.

37

अब अपने न लगते हैं

रुपहली धारा से आते वीणा के सुर
हरित पन्नग की बिछी लता-गुल्म घाती
उत्तुंग चोटियों की बर्फीली छटाएँ....
– अब अपने न लगते हैं

पीत दुकूल मनोहर स्याम,
ये वरन् सप्तरंगों के
श्यामली घटाओं के
क्षिन-क्षिन बदलते कौतुक
मनहर चपला द्युति दामिनी–
...अब अपने न लगते है.

प्रफुल्ल नील अधरों पर
झिलमिलाती शबनम बूँदे
दहकते पलाश से
बरसते अंगारे
ये सुरभि की रानी वो मालती लताएँ....
–क्यों अपने न लगते है.

नीलाम जोड़े पर
तारों की दुनिया
ये शरमाई दुल्हन,
वो पारिजात, परिमल–
अब अपने न लगते है
शायद संदर्भ बदल गये है.

38

सुन्दर सुप्रात बेला

अपनी श्रेष्ठ कल्पना रूप से
प्राची दिशा को सजा
अभिनव ललित अरुण वर्गों में,
रंग अँधियारे को लिया.

रेशमी तारों में पिरो
स्वर्णिम अनूप कंचन माला
उल्लसित हुई ऊषा रानी
धरा को है पहना रही.
नैसर्गिक इस काल में धरणी
अतिशय प्रशान्त है दीख रही.

स्वर्ण-रश्मि जाल मंजुल
अवनि, अम्बर पर बिखर
जल-थल तरु कुसुमों को
कर रहे उज्जवल प्रखर.

घन-कृष्ण घटाएं
संग अरुण-किरण द्युतिमान हुई
रुपहली, लावण्यमयी है, हो रही
रजत नील सागर से ज्यों
सुन्दरी अनिन्घ अवतरित हुई.

पावन वसुधा नव साज रंगी
अपरिमित औदार्य से मिली
अनुपम प्रकाश-पुंजों को
अंचल में अपने सँजो रही.

प्रस्फुटित विकसित वारिजों के
खुल पड़ते अलसाये नयन
प्रफुल्लता मन की कह रहे
विशाल नयनों में समा
मोहिनी कोमलतम प्रभा
बरबस उमड़े छलके पड़े.

धवल जूही कुसुम बेला
विमल नवल परिधान में
सुरभित सौरभ पाँवड़े लिये
सुआगतम् है कर रही.

मधुबयनी कोकिला ने इस पल
स्वर सरित मोहिनी जो गाई
सम्मोहन माधुरी से बींधे
अग-जग सारे है मुसकाये.

नीर-क्षीर धवल राशि
अरूनाभ रश्मियों से श्रृंगारित
स्वर्णिम् दुकूल सी हो रही
आलोड़ित हंसों से विभव मधुर
झंकृत गुन्जित् मृदु ध्वनि हुई.

39

पहचान एक बना लूँगी

मिल रही है धूल में
सौरभ सुमन की भी निशानी
सजल मुक्ता दल बिखर
कह रहे है मूक वाणी.

अनन्त पथ की अपनी दिशा
हो रही है दूर पल-पल
टूटते रहे श्वास फिर भी
हार मैने कब है मानी.

नेह की ज्योति शिखा
उर में सदा अपने लिये
पथ निस्सीम पर अमिट
पहचान एक बना लूँगी.

हर्ष मधुर उल्लास के/उर में हिलोरे ले रही
वारिधि की परिधि भी
उत्ताल बनी मै नाप लूँगी.

स्नेह उपवन में मधुर
अंगार-किरणों को सजा दूँ
सौरभ-बिखर रह जाये जो
प्रीति की लौ उनमें जगा दूँ.

निमर्म गिरि-खंड टूट खंडित
          कमनीय सुकोमलता से भरे
आह्लाद ललित अनुराग वश
          पुलकित मदिर से हो रहे.

नीखता में रही गूँजती
          रागिनी अनुराग की
शत-शत नूतन अभिनव
          कल्पना अभिलाष की.
मृदु जलज मेरे संकल्प बने
          गहन थी शूल की सलिला
प्रतिकूल तरंगें भी ले आई
          मनोहारिनी सुप्रात बेला.

40

बने सजल मसि करुणा के

नि:सुब्द वेदना उर की
करुण मूक गहराती
बींध भावों के शर से कभी
छलक-छलक बह आती.

कोमल स्वप्निल सरसिज सित
तप्त विकल मुरझा से गये
स्निग्ध मृदुल भावों की सुधा
कण अश्रु बने बहते आये.

विस्मृत कथाओं को कर सकने
अंकित मानस पट पर अपने
बने सजल मसि करुणा के
विह्वल हुये गहरा छाये.

गर्म व्यथा के गीतों पर
मृदु लहरी कल्पना छा जाती
धुल-धुल सारे अक्षर पल में
बिखर नयनों से अविरल आते.

41

सुधि पाई पल भर को ही

भाव-विह्वल उल्लास मृदु
स्वप्न भरे अरुणाभ-नयन
स्निग्धा वारि सलिला
अभिव्यक्ति कोमलतम सघन.

पुलकित प्राणों के तार-तार
सौरभ परिमल सुमन श्रेणी के
बह अपरिमित चंचल धाराओं में
अमिय सुधा हृत्-मल्लिका के.

सुधि पाई पल भर को भी
सहस्त्र-युगी संसार सृजे
नभ पर आ छाया इन्द्रधनुष
नूतन अभिलाषाओं से भरे.

दीपों की अनगिन पातों से
झिलमिल मन आँगन हो आया
अनुपम स्नेह भाव उद्‌घार बने
कल्पनाओं में मन भरमाया.

अग-जग कण-कण
भर आहलादमग्न
कंपित पुलकित भावों के घन
रह-रह अविरल सघन उमड़े
मोती में जड़े वे स्नेहिल कण.

लहरें समीर लाई भर-भर
उपहार मधुपूरित परिमल
मृदु कोमल निज अन्चल में
गंध मदिर उन्माद नवल.
द्वि निमिष क्षिन में ही
पहचान हो आई सदियों की
कोमल अनुराग विहाग. राग
छवि अभिनव आज दिशाओं की.

कैसी विरहा, कैसा संगम
कभी विह्वल-कम्पित प्राण थे
व्यथा की वह छाव सारी
बह गई हर्षोन्माद से.
स्नेह घन शत-शत निर्झर
पूरित अभिलाष अंचल आज है
सजा ज्योति निधि अनुराग से
द्युतिमय स्वप्निल संसार है.

42

क्यों हो तुम निरुपाय-कम्पित

शत-शत कड़ियाँ पड़ी रही,
कोमलतम तेरे पग में है
तिमिर घटाएँ दिन-रात सदा
नयनों से तेरे बरसती रही.

स्वप्न कोमल उर में पिघले
असह्य दारुण संताप गहन
दर्पण सहज विश्वास तेरे
विच्छिन्न क्षिन्न मग में बिखरे.

खण्डित दर्पण के कण अवशेष
कोमलता से है उठा सहज
नूतन अभिनव चितवन छवि
क्या होती नहीं इच्छित तुम्हें ?

तिमिर-पर्व ही क्यों
समझा निज जीवन को तुमने
अर्न्त-सम्बल ही तो सबल बन
ज्योति नव-जीवन के बने.

प्रतिपल अभिनव किरणों की
स्वर्णिम द्युतिमय आभा से
पथ गहन दुर्गम अपना
नव-आश किरणों से भर लो.

संभव ना हो पाये भी
ऐसी भी विकटता क्या होगी
सतत् प्रयत्नों से तो सदा
शमित ज्वाल प्रलय की होती रही.

संकल्प अचल ऐसा उठा लो
अंगार-सम हो जाये वे
असंख्य लौह-कड़ियाँ पिघल
मृदु नीर सम बह जाये रह.

अंगार उष्मा उर में सँभाले
क्यों हो तुम निरुपाय, कम्पित
अपरिमित धीरज साहस भरी
निस्सहाय निर्बल तुम तो नहीं.

तिमिर पारावार में
भावों को सम्बल बना
दिग्भ्रान्त पथ पर तुम सदा:
अर्न्त-प्रकाश अक्षुण जलाना.

43

पल-निमिष सजी थी वो कैसी

पल-निमिष सजी थी वो कैसी
अभिषेक किये बहु तारों के
मदमाती मदिर इन्दु थी विहँसती
मोहित निज सुषमा साजों पे.

विस्मित निहार विकसित कल्पित
स्वप्निल कोमल कलियाँ मुखरित
प्रतिध्वनित सरस मधुरिम गुन्जित
मृदु अनुरागभरी लय अभिलषित.

मधुमास ललित अभिराम सजा गई
सुषमा परिमल भीनी पुष्मित
पुलक मधुरिम अनगिन नूतन
सहसा कुसुम कमनीय स्फुटित.

सुकुमार कलित कोमल भीनी
कल्पना उर्मि चपलित उल्लसित
पंख सुरभि समीरों पर उड़ती
लख आती इन्द्रधनुष चित्रित

वरन् सुनहरे स्वर्णालंकृत
विजड़ित मनहर पट श्यामल
शोभा वारिधि निज नयनों में
भर-भर लाई हर्षित कोमल.

मधुरिम स्वप्न संसार के
मृदु भावना अभिलाष सी
ज्योत्सना की किरणों में मचलती
उर-रागिनी झंकार सी.

अपलक निहारते नयना द्वि
अतिशय पुलकित सौंदर्य विभव
प्रतिपल-परिमल सौरभ समीर
उपहार लुटाते मंजुल अभिनव

प्रशान्त निरुपम काल में
अविचल विस्मित भई चेतना
सुरभित सकल संसार वश
सुकुमार स्वप्निल कल्पना.

44

आई वही रजनी है

आई वही रजनी है
सस्मित पुलक भरी मुसकाती
श्यामल कर कंजों में अपने
सुमन तारों के हार सजाती.

परिमलमय कोमल सुरभि के
पाँवड़े बिछाती है आई
शत मधुमय मंजुल गुन्जित
झंकार जगाती है आई.

लघु कलिकाओं के अधर विहँस
मादक सौरभ के साज छिड़े
अम्बर वितान मलय-सिक्त
अभिराम नवल उल्लास रचे.

स्वप्निल लोकों के रंगमहल
तारिक झिलमिल नभ में दीखते
आलोक मदिर द्युति किरणों ने
कई नूतन मृदु भाव बिखेरे.

रुनझुन नूपुर पग-चाप अलस
वारि-वीचि मधुरिम गुन्जन
विहँस विहँस सुहास रजतमय
तरल छवि सुकुमार बहे.

विकसित श्यामल उज्जवलता में
स्निग्धा निरुपम मोहक सुषमा
सुरभि के ज्योतिर्मय अनगिन
चित्र विभव अंकित उपमा.

विमुग्ध उल्लास उर के
पंख पाये जो चपल
पहुंचे क्षितिज के पार जा
मुखरित ललित अभिलाष नवल.

45

मैंने दीप जलाये पथ पर अविरल

झंकार सम्मोहन की तेरी
जो शून्य में भी पा जाती
बिसरा अग-जग तत्क्षण ही
मै पार क्षितिज के आ जाती.

घिर निस्पन्द हृदय में छाते
विस्मृति के मेघा चंचल
पुलक सुनहरे ललित विपुल
मृदु सौम्य इन्द्रधनुषी कोमल.

शत बन्धन पथ के विकट अंध
न दंश तनिक भी दे पाते
निमर्म भाव अपने जन के
क्या भी विक्षुब्धः कर पाते.

झिलमिल पलकों पर छवि तेरी
पल-पल विलास रच जाते
विस्मित लोचन विह्वल पूरित
सम्मुख न तुझे जो पाते.

विस्तृत किन राहों में खोये
भूली चिर परिचित सी दिशाएँ
कण-कण पर अवनि के तेरे
पग-चिह्न ढूंढ़ मै भरमाई.

नन्दन वन सुरभित कानन
अश्रु अनवरत धार से भर आये
मैने दीप जलाये पथ पर अविरल
भूले से भी न तुम आये.

जीवन का संगीत पल-पल
कर उठा है आज क्रन्दन
स्मृतियों के परिमल भी करते
व्याकुल मुझे क्षीण, क्षण-क्षण.

आई ऊषा अरुण-कंचन लिये
श्रृंगार कलियों में रचाने
तम-विरहा शेष होने आई
ऐसी ध्वनि कोई सुना दे.

46

अम्बर ने डारे फाग विपुल

नव-कलियों के अधरों से छिड़ती
शबनम की सजल थी रागिनी
पुलक मचल अभिराम सजाती
झिलमिल तारों की चाँदनी

मधुमय बोल मृदु मदिर-मदिर
मलयानिल साजों ने छेड़े
सौरभ कण अनगिन उड़ते
परिमल अनूप पराग भरे.

मर्मर मधुर गुन्जन कोमल
कलित माधुरी पिक ने कही
अलि-भ्रमर वृन्द निद्रित से
मत्त-सौरभ के थे अलासाये.

रंग सजीले इन्द्रधनुष के
सुरमई चम्पक अरुण-अरुण
अम्बर ने डारे फाग विपुल
पुलकित कण-कण, वसुधा-प्रांगण.

जगा लाई राग-विस्मृत
मुझमें नव-कम्पन परिमल
मोहक सुहास, मंजुल विलास
चितवन सुधि कोमल-कोमल.

47

है संपूर्ण-पूर्ण जीवन का राग

मंजुलमय अतिशय सुन्दर मोहक भावपूर्ण अभिलाषपूर्ण
सृष्टि के अनमोल रतन को जीवन है मिला अनुरागपूर्ण
सतरंग, नवरंग भाँति विविध माधुरी प्राकृत ओकपूर्ण
स्वर्णिम, स्वप्निल ज्योतित सुरमित मानव-जीवन उल्लासपूर्ण.

अलौकिक जीवन की सुधा
    है शोभित उज्जवल ज्योतिपूर्ण
अपरिमित अविजित विपुल शक्तिमय
    कल्पना अनूप प्रबुद्ध पूर्ण.

कुसुमित जीवन स्वप्निल विलास
    कल्पना मृदु आंकक्षा-अभिलाष
नयन मनोहर अपलक निहारते
    ज्योतिस्मान विभु मंजुल प्रकाश.

अनुवेषण, चिन्तन चयन कला की
    पाई अमूल्य निधि उदार
ज्ञान-चेतन सौंदर्य छवि ज्योति
    झंकृत माधुर्य प्रीत विविध प्रकार.

अविरल दयामय वारिधि
    उद्वेलित उर में है विशाल
अभिसिंचित मानस-जलज पल-पल
    _मधुरतम भाव रसाल.

विद्या-विवेक, रचना नूतन
अपरिमित सौरभ ममता निःसृत
गरिमा क्षमा महत् भावों की
जड़-चेतन को करती विस्मित.

अर्न्तमन कुछ खोज रहा
शाश्वत, अनन्त अरु सत्य-रूप
प्रस्फुटित अर्न्त-ज्योति से है
रश्मि-प्रभा अभिप्राय रूप.

कोमल तम मृदु अनुराग-प्रीति
उर की है, एक दिव्य विभा
द्युति ज्योति की मिली जिसे
अभिनव उसकी शुचि -प्रभा.

विस्तृत व्योम नीला-अम्बर
निज मानस में ही अंकित
ज्योतित भाव तारिक-दल से
निशि-पल, नवोल्लास प्रेरित.

प्रेम-वारिधि अन्तः स्थल में
आलोड़ित हिल्लोलित अभिलाष
जन-जन के प्राणों में कोमल
करती नूतन ज्योति-प्रकाश.

झंकृत गुन्जित हृत्-तन्त्री से
प्रमुदित मोहक परिमल-पराग
सम्मोहिनी सी मृदु कोमल तान
है सम्पूर्णा पूर्ण जीवन का राग.

48

स्मृति यवनिका से बिखरे

सपनों के लहरों पर तिरते
आये सुरभित भाव-सुमन
विस्मृति यवनिका से बिखर
छाये है मृदुल स्नेह-सघन.

नयनों के उजियास बने
चंचल कोमल अनुराग
प्राणों के प्रति तार में
स्पन्दित पुलकित मधुर राग.

स्वप्निल शत-शत कल्पनाएँ
धूमिल हो आई थी उर की
उज्जवलतम आभा से निखरी
अभिनव प्रीत मृदु भाव भरी.

निमिष पल अनजान सी
पहचान अपनी हो रही
विह्वल मदिर आह्लाद वश
अविरल मोतियों की झड़ी.

छवि चिर-इच्छित चितवन
सुषमा मृदु साकार
शून्य पलों में घिर छाये
ज्यों एक मधुर झंकार.

49

भावों के स्वप्निल महल

स्पन्दन से कलियों की
मृदु मंजुलमय सौरभ साज छिड़े
पल निमिष में ही हगों ने
अभिनव अनगिन उद्‌गार कहे.

कब सुमन ने थी सजाई
अभिलाषों के दीप अपने
स्निग्धता में स्नेह के
झंकार कितने थे छिड़े.

दृगों में ही बन गये
थे अमिट भावों के महल
उमंगों ने पल-पल सजाये
स्वप्न के श्रृंगार कोमल.

स्वर-सरित मृदु रागिनी
अनुराग के संसार बन
काल निमिष अंकित करते
सौरभ-परिमल साज नूतन.

अभिराम चितवन की झलक
अंगराग नव कुसुमों के
अभिषेक मृदुल स्वर्णिम ललित
स्मित-चावनी गुन्जार करती.

उल्लास पुलक घिर-घिर छाये
नभ मानस के पट मंजुल
प्रति साँसों के तार पर
अंकित छवि कल्पित कोमल.

सजल स्निग्ध जलजात प्रीति के
स्नेह सुधा सलिला विकसित
वीचि झंकृत गुन्जारों में
अनुपम परिमल-विलास मुखरित.

50

किसने जगाई आज है–

किसने जगाई आज है
स्वर की वही परिचित सी तान
श्रवन तृषित रंध्रों में भर दी
स्वप्निल कल्पना के से गान.

स्वर–लहर पंचम सुर की
जैसे पिकबयनी में छेड़ी
कंपित निश्वासों ने पाई
अमिय मृदु अनुराग निधि.

कण–कण में कैसे बिखरे उमड़े
अभिलाषाओं के गुन्जार
एक गिरा को तडप. रही थी
मिले आज अपरिमित उपहार.

निस्पन्द पड़े जीवन की अपनी
शून्यता नीरवता ही भरती
उल्लास–हास की कोई किरण
भूले भी न पग धरती.

जब चाहूँ मै कुछ कहना
अति अस्फुट मंद मर्मर भी
कारुण्यता अपनी ही विवश हुई
नहीं कभी कुछ कहने देती.

थक आई पलकें मेरी
तकते–तकते जिसका मुख
शायद वही चितवन छवि
खड़ी आज मेरे सम्मुख.

जला नयन–निज दीप करती
प्रतीक्षा निशि दिन प्रतिपल
क्षीण सी वही आश थी
स्पन्दित प्राणों में अविरल.

तम-रातों में आलोक लिये
जलती रही अभिलाषाएँ
नहीं तनिक भी पाई डिगा
मुझे काल की भी सीमाएँ.

अटल भावना ही मेरी
गुन्जन अभिराम है बनी
क्रन्दन व्यथा सारी बिसर गई
ध्वनि मैंने जो उसकी सुनी.

51

इन्हीं पलकों तले-

कई दीप मृदुतम भावों के
मेरे इन नयनों में जलते
विस्मृत गीतों की रागिनी
पलकों से छलके आते
कुछ पुलकित है चपलित से
आह्वलाद मुदित रंग लाये हुये
प्राणों की वीणा से मृदु
राग मंजुल लाये हुये.

कहीं करुणा सिक्त पावस की
रिमझिम सी अवलि है
वेदना के गीतों से
घिरती हुई बदली भी.

स्वप्निल अभिराम मृदुल
तारकमय छवि झिलमिल
मधुरिम अभिलाष सजी
सुषमा उल्लास भी.

अंगार की ज्वाल भी
छिपी इन्हीं पलकों तले
तिमिर में विद्युत जगा लें
ज्वलंत रोष इन्हीं पलकों तले.

प्रलय को माधुरी की
राह दिखा ले आये
वो सौम्य-द्युति–सम्मोहिनी
रश्मि इन्हीं पलकों तले.

अभिनन्दन करती स्नेह–स्नात
भाव सुमन जयमाल लिये
वो स्नेह सजल करुण मुक्ता
सजते इन्हीं पलकों तले.

52

कर उठे हैं आज क्रन्दन

कर उठे है आज क्रन्दन
वसुन्धरा के भी नयन
सत्य की निर्मम बली
जीत निष्ठुरता की यहाँ
प्राण से अनमोल तुलते,
रत्न-मोती ही जहाँ
कैसे भी कब तक सहे,
नितांत निर्मम भाव को
मूक दृगों से उमड़ती
वेदना–अवसाद को.

निशि दिन तड़पती विकल निर्बल
कोमल कली मृदु भाव की
व्यथित कारुण्य निःशब्दता
कब तक भी कैसे सुने.

स्वार्थपरता छा रही,
जग विभ्रान्त सा है हो रहा
नव–ज्योति जीवन की भूला
तम–गहन में खो रहा.

दु:ख जल से भीगी कलियाँ
निश्वासों में ही सोती
स्नेह भरे सौरभ परिमल
व्याकुल विदग्ध ही होती.

शत–शत करुणा के दीप जले
रागिनी उल्लास की
अनुपम निधि अनुराग की
उर में सँजोये थी रही.

दग्ध जीवन ताप से
उल्लास भी अंगार बनते
कल्पना की सुन्दर छवि में
अवसान के संसार बनते.

ज्वाल से ही कब सुझी है
ज्वालाएँ उन्मत्त प्रबल
स्निग्ध मृदुता से सहज
हो जाये शमित विकराल अनल.

तृषित जग की प्यास में
कल्पना भी राख होती
व्यभिचार निष्ठुर संधान में
अवशेष सौरभ के सँजोती

53

मैं जलती–जलती बुझने आई

मैं जलती–जलती बुझने आई
तम घोर–अंधेरा जा न सका
विकराल प्रलय की आँधी थी
कम्पित साँसें फिर भी जलती.

लघु किरण सँभाले अन्चल में
झिलमिल ज्योति अभिलाष लिये
अपरिचित राहों पर बढ़ती
ज्योति अनुपम उल्लास लिये.

पलकों पर अविराम सजल
अनुराग प्रीत की भाषा थी
मरु–मरीचिका के से इस जग में
इसकी भी किसे अभिलाषा थी.

रश्मि–किरण मुद्रा की
चहुँ ओर हो रही आज चर्चित
स्नेह मृदु सुकुमारता
रही बात स्वप्निल सी कल्पित.

पथ में प्राणों के सौरभ
गीत मुखरित बिखर गये
भाव चिन्हित राह में
परिचित अनजान से बढ़ते गये.

दिग्भ्रान्त सी ही मैं हुई
सजल हिम सा पिघल मन
अर्न्तनिहित आलोक द्युति
भ्रमित फिर भी क्यूं विकल.

अभिनव स्मित शुचि प्रात की
उर की व्यथा क्या हर सकी
स्वर्णिम अरुण किरणें विहँसती
निश्वास ललित न कर सकी.

(54)

स्मृति प्रिय की मधुर भीनी

स्मृति प्रिय की मधुर भीनी
है झिलमिलाती आज हुई
तारों से घने छाँव तले
नीलम से मधुवन नभ में
मंजुल कुसुमों के दीप जले
पल–पल में मकरन्द सुवास सरिस
किरणों ने मदिर गुन्जार भरे.

मलय–बयार मदिर अलसाई चली
कली सौरभ सकल श्रृंगार किये
हर्ष पुलक की संरचना से
आहलादित हुये, नव–भाव लिये

मधुर रव गुन्जार भीनी
उठती क्षितिज के पार से
नितान्त नीरव विभावरी
सम्मोहित मुदित नव–राग से.

सुस्मित अरुण से ललित वरन्
बिखरे छाये पंखड़ियों से
माधुर्य विस्मृति के नवल
सुषमा विलास छवि आज रचते.

डा० ... स्मारक पुस्तकालय

2e9839
2129921